International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 14 Issue 8 || August 2025 || PP. 191-195

कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त:समकालीन प्रासंगिकता

श्रीमती निशा यादव

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान

एस.एम.एम.राजकीय कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

Mail- kumarsarvesh789@gmail.com

कौटिल्य प्राचीन भारत के सबसे प्रभावशाली विचारकों में से एक हैं। इनकी पहचान सिर्फ एक विचारक की ही नहीं है अपितु कौटिल्य तक्षशिला विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित आचार्य भी थे। विचारक और शिक्षक से इतर कौटिल्य की भूमिका और प्रभाव अपने समय की शासन और राजनीति पर भी था। चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री और प्रधान पुरोहित भी रहे । कौटिल्य ने प्रधानमंत्री का दायित्व कुछ समय के लिये मौर्य वंश के ही शासक बिन्दूसार के समय भी संभाला था। अपने समय के राजनीतिक अनुभवों को आधार बनाकर कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' की रचना की है। यह पुस्तक न केवल भारत अपितु दुनिया भर की शासन एवं राजनीति के लिये मार्गदर्शक है। अर्थशास्त्र में राजनीति के जिन सूक्ष्म एवं आधारभूत पहलुओं पर प्रकाश ड़ाला गया है उनका अनुकरण आज की राजनीति में भी देखा जा सकता है। राज्य की उत्पत्ति, शासन के चरित्र, शासन के संगठन आदि सैद्धान्तिक पक्षों पर विशद विश्लेषण के अलावा कौटिल्य ने घरेलू एवं अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के व्यावहारिक पक्षों पर भी प्रकाश ड़ाला है। राजनयन के चार उपाय, षड्गुण नीति, गुप्तचर व्यवस्था, सैन्य व्यवस्था, मण्डल सिद्धान्त आदि बातों का संबंध पर-राष्ट्र संबंध से ही है। इन सिद्धान्तों ने अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के कई आधुनिक सिद्धान्तों को आधार और दिशा दी है। बहरहाल हम अपने शोध पत्र के मुख्य विषय 'मण्डल-सिद्धान्त और इसकी समकालीन प्रासंगिकता पर आते हैं।

क्या है कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त-

मण्डल का मतलब है राज्यों का समूह। अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने पर-राष्ट्र संबंध पर काफी प्रकाश ड़ाला है। इस सिद्धान्त में कौटिल्य विजीगीषु राज्य को केन्द्र में रख कर पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। भू-राजनीति पर आधारित यह सिद्धान्त बताता है कि विजीगीषु राज्य पडोसी देशों के साथ संबंध शत्रुतापूर्ण होंगे। पड़ोसी का पड़ोसी विजीगीषु राज्य का मित्र होगा। यह सिद्धान्त शत्रु का शत्रु मित्र होता है और दोस्त का दोस्त मित्र होता है के नियम पर काम करता है।(1) मण्डल सिद्धान्त विजीगीषु राज्य के इर्द-गिर्द एक वृत की कल्पना करते हैं जिसमें निम्न प्रकार के राज्य होंगे-

- **विजीगीषु राज्य- मण्डल के केन्द्र में स्थित राज्य जो अपने राज्य में उत्तम शासन स्थापित करने के बाद अन्य राज्यों पर विजय प्राप्त करने के ध्येय से उनकी स्थिति का अध्ययन करता है और उन्हें अपने अधिकार में लेने की रणनीति बनाता है।**

- **अरि राज्य**- सामने की दिशा में विजीगीषु राज्य से सीमा साझा करने वाला राज्य अरि राज्य होता है।
- **मित्र राज्य-** सामने की दिशा में अरि राज्य से आगे स्थित राज्य मित्र राज्य होता है। क्योंकि यह अरि राज्य का शत्रु होने के कारण विजीगीषु राज्य का स्वाभाविक मित्र होता है।
- **अरिमित्र राज्य**- सामने की दिशा में मित्र राज्य से आगे स्थित राज्य अरिमित्र राज्य होता है। शत्रु का मित्र होने के कारण यह विजीगीषु राज्य का स्वाभाविक शत्रु होता है।
- **मित्र-मित्र राज्य**- अरिमित्र के सामने वाला राज्य मित्र-मित्र राज्य होता है क्योंकि यह मित्र राज्य का मित्र होता है। यही वजह है कि यह विजीगीषु राज्य का मित्र होता है।
- **अरिमित्र मित्र राज्य-** अरि मित्र-मित्र राज्य अरि मित्र राज्य का मित्र होता है। इसलिए यह विजीगीषु राज्य का राज्यशत्रु होता है।
- **पार्ष्णिग्राह**- विजीगीषु राज्य के पीछे स्थित राज्य पीठ का शत्रु राज्य होता है।
- **आक्रंद**- पाषर्णिग्राह राज्य से आगे का राज्य आक्रंद राज्य होआक्रंद सारता है जो विजीगीषु राज्य का मित्र होता है।
- **पार्ष्णिग्राहासार**- ऐसा राजा जिसका राज्य आक्रंद की सीमा के साथ लगा हो। अतः वह आक्रंद का स्वाभाविक शत्रु होता है और विजिगीषु का परोक्ष मित्र होता है और विजिगीषु का परोक्ष शत्रु होता है।
- **आक्रांदासार**- ऐसा राज्य जिसकी सीमा पार्ष्णिग्राहासार राज्य की सीमा के साथ लगा हो। अतः वह पार्ष्णिग्राहासार का स्वाभाविक शत्रु होता है। आक्रंद का परोक्ष मित्र होता है और विजिगीषु का भी परोक्ष मित्र होता है।
- **मध्यम राज्य-** ऐसा नृपति जिसका राज्य विजिगीषु राज्य और उसके शत्रु दोनों की सीमाओं से लगा हो। ऐसे में यह राज्य किसी भी राज्य का मित्र या शत्रु नहीं हो सकता। मित्र होता है और विजिगीषु का परोक्ष शत्रु होता है।
- **उदासीन राज्य**- ऐसा नृपति जिसके राज्य की स्थिति विजिगीषु के शत्रु एवं मध्यम दोनों से परे हो, परंतु वह इतना बलशाली हो कि संकट के समय वह इनमें से किसी की भी मदद या विरोध करने में सक्षम हो। अतः ऐसे राज्य की अनदेखी नहीं की जा सकती है।(2)

12 राज्यों के समूह को कौटिल्य मण्डल कहते हैं। भू राजनीति के आधार पर इन्हीं राज्यों में कौटिल्य विजिगीषु राज्य के मित्र, शत्रु, उदासीन और मध्यम राज्य की तलाश करता है।

समकालीन प्रासंगिकता

एक विचारक कभी शून्य में नहीं लिखता है। देश, काल और परिस्थितियाँ विचारों को दिशा देती हैं। कौटिल्य का मण्डल सिद्वान्त भी अपने समय की शासन और राजनीति को मध्यनजर रख कर लिखा गया था किंतु इस सिद्वान्त में राज्यों के व्यवहार के बारे में कुछ शाश्वत बातें भी हैं जो इसे समकाल में भी प्रासंगिक बनाती हैं। मंडल सिद्धांत की समकालीन प्रासंगिकता को हम बिंदुवार समझने का प्रयास कर रहे हैं-

- यह सिद्धान्त अन्तरराष्ट्रीय संबंध में शक्ति के महत्त्व को रेखांकित करता है। आज से तेइसो वर्ष पूर्व कौटिल्य ने मण्डल सिद्धान्त में विजिगीषु राज्य या राजा के लिये अपने को अधिकाधिक शक्तिशाली बनाना मुख्य उद्देश्य

था। उसी तरह की प्रवृति आज के राष्ट्र-राज्यों में देखी जा सकती है। दो हजार साल के इतिहास में राष्ट्र-राज्यों के व्यवहार में शक्ति को राष्ट्रहित के रूप में मानने की प्रवृति निरंतर बनी हुई है। अरब-इजरायल संघर्ष और रूस-युक्रेन के संघर्ष को इस रूप में देख और समझ सकते हैं।3

- वर्तमान समय अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के यथार्थवादी सिद्धान्त को प्रकाश में लाने का श्रेय भले ही हंस मोर्गेन्थाऊ को दिया जाता है किंतु इस सिद्धान्त के बीज कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त में मौजूद थे। मोर्गेंथाऊ कहते हैं कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है। यही संघर्ष कौटिल्य के मण्डल सिद्धांत में दिखता है। यद्यपि शक्ति राजनीति की बात मैकियावली भी करते हैं किंतु मैकियावली यह बात पुनर्जागरण काल में करते हैं। कौटिल्य एक प्राचीन कालीन विचारक था। कौटिल्य जब शक्ति राजनीति की बात कर रहे थे तब दुनिया में राष्ट्र राज्यों का अभ्युदय आज की तरह हुआ भी नहीं था।4
- कौटिल्य मण्डल सिद्वान्त में यह मानकर चलते हैं कि भौगोलिक रूप से सन्निकट देशों के मध्य संबंध मधुर नहीं होते हैं। वैश्वीकरण के दौर में कौटिल्य का यह सिद्धान्त अक्षरशः तो लागू नहीं होता क्योंकि आज की दुनिया जटिल रूप अन्तर्निर्भर है और कुछ पड़ोसी देशों में संबंध मधुर भी मिलते हैं किंतु कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त आज की अन्तरराष्ट्रीय हालात को समझने और विश्लेष्ण का मजबूत पैमाना देते हैं। पडोसी देशों के साथ शत्रुतापूर्ण संबंध की सामान्य वजह भी होती हैं मसलन- पड़ोसी देशो में सीमा विवाद अमूमन मिलता है, नदी जल बंटवारे को लेकर विवाद उत्पन्न हो जाता है और दो पडोसी देशों में समृद्धि और प्रगति के अवसर बराबर नहीं हैं तो अवैध प्रवासन संकट पडोसी देशों के संबंध खराब कर देता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और मैक्सिको के रिश्ते अवैध अप्रवासन के चलते चुनौतीपूर्ण बने हैं वहां दीवार खींचने की बात चल रही है। नदी जल वितरण से उपजे विवाद भी दुनियाभर में पडोसी देशों के मध्य कमजोर संबंध की वजह है। भारत-बांग्लादेश, भारत-पाकिस्तान और भारत-चीन के मध्य क्रमशः गंगा, सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदी विवाद इसके उदाहरण हैं।5 भारत के पूर्वोत्तर हिस्से में बांग्लादेश से अवैध प्रवासन एक गंभीर समस्या है। भारत-चीन, भारत-पाक, भारत-नेपाल और भारत-बांग्लादेश के मध्य सीमा विवाद है।
- कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त किसी भी राज्य के लिये पर-राष्ट्र संबंध के महत्त्व को रेखांकित करते हैं। मण्डल सिद्धान्त के माध्यम से कौटिल्य ने विश्लेषण किया है कि किसी भी राज्य के हित केवल राज्य की सीमाओं तक सीमित नहीं हैं अपितु हितों का विस्तार सदूर राज्यों तक हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि कौटिल्य जब मण्डल सिद्धान्त का निरूपण कर रहे थे उस समय दुनिया आज की तरह करीब और अन्तर्निर्भर नहीं थी। आज देशों को अपनी सुरक्षा, वस्तु एवं सेवाओं के लिये अन्य देशों पर निर्भर रहना होता है। कोई भी देश कितना भी शक्तिशाली और आत्मनिर्भर होने का दावा करे किंतु वैश्विक समुदाय से जुड़े बिना अपने हितों को सिद्ध करना संभव नहीं है। वैश्विक तापन, वैश्विक आतंकवाद, अवैध आप्रवासन, व्यापक विनाश के हथियारों की होड़ आदि साझी चुनौतियों से कोई देश केवल अपने प्रयासों से नहीं निपट सकता।6
- विजीगुष राज्य के राजा के लिये साम, दाम, दण्ड और भेद नामक जिन चार उपायों की बात कही गई है। आधुनिक समय में भी राष्ट्र-राज्य अपने राष्ट्र हित की अभिवृद्धि के लिये इन उपायों का सहारा लेते हैं। चीन की युआन कुटनीति और अमेरिका की डॉलर डिप्लोमेसी दाम उपाय का उदाहरण है क्योंकि आर्थिक सहायता के माध्यम

से दूसरे देशों के व्यवहार को अपने हितों के अनुसार मोड़ा जाता है। साम का मतलब समझाना है। कूटनीति के स्तर पर वाक्पटुता से राजनयिक अपने हितों को पूरा करने में कामयाब हो जाते हैं। हेनरी किसिंजर ने अपनी उच्च कूटनीतिक समझ के चलते शीत युद्ध में अमेरिका और चीन को करीब ला दिया था। यह दूसरी तरफ भेद का उदाहरण भी था क्योंकि चीन के अमेरिका के करीब जाने से साम्यवादी खेमें में फूट पड़ गई थी।7 इससे अमेरिका को अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में हितों को साधना आसान हुआ। दण्ड को कौटिल्य अंतिम उपाय के रूप में निरूपित करते हैं। आज भी अन्तरराष्ट्रीय संबंधों में दण्ड या सजा के उपाय का प्रयोग किया जाता है। पश्चिमी देशों द्वारा ईरान पर आर्थिक प्रतिबंद आरोपण की घटना को हम दण्ड के रूप में देख सकते हैं।

निष्कर्ष

समकालीन विश्व में मण्डल सिद्धान्त की प्रासंगिकता को दो दृष्टिकोण से समझ सकते हैं। यथार्थवादी दृष्टिकोण से बात की जाये तो मण्डल सिद्धान्त की प्रासंगिकता स्पष्ट तौर पर दिखती है। क्योंकि शक्ति की राजनीति अन्तरराष्ट्रीय घटनाओं में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मौजूद होती है। पड़ोसी देशों के साथ विवाद की भू राजनीति भी समझी जा सकती है क्योंकि समीपस्थ बहुत से देशों के मध्य सीमा रेखा, नदी जल बंटवारा, अवैध प्रवासन आदि मुद्दों पर तनाव रहता है। किंतु यदि आदर्शवादी दृष्टिकोण से मण्डल सिद्धान्त का विश्लेषण किया जाये तो इस सिद्धान्त की प्रासंगिकता केवल निदानात्मक है, उपचारात्मक नहीं। क्योंकि यह सिद्धान्त अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में संघर्ष का कारण तो बताता है किंतु कोई उपचार नहीं देता है। विजिगीषु राजा की अभिलाषा एक साम्राज्यवादी अभिलाषा है। साम्राज्यवाद एक विद्यटनकारी प्रवृति है इसे स्वाभाविक घटना मानकर इसके प्रति सहज नहीं रहा जा सकता। पडोसी देशों के मध्य साझी समस्याओं का हल भी किया जा सकता है और एक शांत व प्रगतिशील पड़ोस का निर्माण भी किया जा सकता है। यूरोपीय संघ राष्ट्र-राज्यों के मध्य शांति और सहयोग की दुनिया में सबसे बड़ी मिसाल है। दो विश्व युद्धों का केन्द्र रहा यूरोप आज यूरोपीय संघ के द्वारा वीजा मुक्त आवागमन, मुक्त बाजार, साझी मुद्रा और राजनीतिक सहयोग की दिशा में आगे बढ रहा है।

संदर्भ सूची-

1. **ओम प्रकाश गाबा 'भारतीय राजनीतिक विचारक' मयूर पेपरबैक्स प्रकाशन, इंदिरापुरम, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण-2015, षृष्ठ संख्या-39.**
2. **डॉ.मधुकर श्याम चतुर्वेदी 'प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक' कॉलेज बुक हाऊस प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर, प्रथम संस्करण-2002 पृष्ठ संख्या-78.**
3. **रूमिका बासु 'अंतरराष्ट्रीय राजनीति:अवधारण, सिद्धान्त और मुद्दे' अटलांटिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- जनवरी 2024, पृष्ठ संख्या-113.**
4. **चिराग पटेल 'अर्थशास्त्रःए बुक ऑन पॉलिटिक्स, स्टेटकाफ्ट्स एंड पावर' रोहिणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2023. पृष्ठ संख्या-104.**

5. **हर्ष वी. पंत 'पॉलिटिक्स एंड जियोपॉलिटिक्सःडिकोडिंग इण्डियाज नेबरहुड चैलेंज' रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- जनवरी 2021, पृष्ठ संख्या- 188.**
6. **डॉ.सुरेश आर. 'अर्थशास्त्र ऑफ कौटिल्यः रलेवेंस इन द 21 सेंचुरी' विज बुक्स इंडिया प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- अप्रेल-2023, पृष्ठ संख्या-107.**
7. **शिवशंकर मेनन 'इण्डिया एण्ड एशियन जियोपॉलिटिक्सः द पास्ट एंड प्रजेंट' बुकिंग इंस्टिट्शन पब्लिकेशन,वाशिंगृन, प्रथम संस्करण- अप्रेल-2021. पृष्ठ संख्या-273.**